M. T. B. COLLEGE, SURAT
Manuscripts Library

No. Ref. / Ser. 451

Title: Chandomanjari

451

छंदोमञ्जरी

Chhandomanjari		Title
		Author
		Editor
		Year, Vols.
		Publisher
451		Remarks

श्रीगणेशायनमः॥ ॐ॥ ॥ छंदोमंजरी॥ गायत्रीत्रिपदा॥ ओमासश्चर्षणीधृतः॥ ८।८।
८। पंक्तिः उत्तरार्द्धे॥ ५।५।५।५। ६। पदपंक्तिः अग्नेत्वमग्ने॥ ५।५।५।४। ध्रुवा भूमि॰
तामेकुमध्यानां॥ ६। ७। ११। पादनिचृत्॥ ७।७।७। अतिनिचृत्। पुरुत्रा पुरूणां। ७।
६। ७। यवमध्या। सुन्वेयोवसूनां। ७। १०। ७। वर्धमाना। ईशानावार्याणां। ६। ७।
८। प्रतिष्ठा। आपः दर्णानमेकजं। ८। ७। ६। ह्रसीयसी। मेघमुद्भियाणां। ६। ६। ७।
विपरीताह्रसीयसी इंद्रः सहस्रदानां। ७। ६। ६। इतिगायत्रीभेदाः। अथोष्णिक्॰॥
योनोदेवःपरावतः॥ ८।८। १२। पुरउ॰ष्णिक्। तत्रचक्षुर्देवहितंशुक्रमुच्चरत्॥ १२। ८।८।
ककुप्। आसस्वायःसवर्दुघां॥ ८। १२। ८। ककुम्मंकुशिरा॥ दशीरेकाणसन्वे दर्दिर्वसु॰
॥ १२। ४। तनुशिरा। प्रयाघोषे भगवाणेनशोभे॥ ११। ११। ६। पिपीलिकमध्या। स्त्री

मस्य सुयुजा विप्रतावेः॥ ११। ६। ११। अनुष्टुप्। मर्मा॥ पितुं नु स्तोषं॥ ८। ८। ८। उष्णिक्
नदेव ओ हतीनां॥ ७। ७। ७। ७। अथानुष्टुप्॥ प्रियमेधवदत्रिवत्॥ ८। ८। ८। ८।
पदपंक्तिः॥ तवस्वादिष्ठा॥ ५। ५। ५। ५। ५। ६। माकस्मे धातमस्यमित्रीणनः॥ १२। १२।
८। पिपीलिकमध्या॥ पर्यूषप्रधन्वा वाजसातये॥ १२। ८। १२। काविराट्॥ ताविद्वांसाद
नामहेवां॥ ९। ९२। ९। नवरूपी॥ विरुछामिमाकया ३ नदेवान्॥ ९। ३०। ९३। विराट्॥ क्रु
धीदवंविषिप्रानस्याद्रेः॥ ३०। ३०। ३०। काविराट्॥ अग्नइंद्रश्चदाशुषेदुरोणे॥ ११। ११
११। बृहती॥ तंसानवंधिनोनवोभिः॥ ९। ९। ९। ९। बृहती॥ माचिदन्यद्विशंसत
त॥ ८। ८। १२। ८। पुरस्ताद्बृहती॥ अधीन्वयसमतिंचसतच॥ १२। ८। ८।
८। न्यंकुसारिणी॥ एतंशंसमिंद्रास्तयुष्टूं॥ ८। १२। ८। ८। उरोबृहती॥ तुभ्यमेतक

राम
१

दुकमेतत्॥ ८। १२। ८। ८। स्कंधोग्रीवीवा॥ मस्यपाधिनेमहः॥ ८। १२। ८। ८। उप
रिष्टाद्बृहती॥ येपातयंतेअज्मभिः॥ ८। ८। ८। १२। विष्टारबृहती॥ सुमहाशंस
होरत्॥ ८। १०। १०। ८। दुर्जबृहती॥ अधपादिनेपचमानरोदसी॥ १२। १२। १२। पि
पीलिकमध्या॥ अभिवोवीरमंधसोमदेवयुतये॥ १३। ८। १३। विषमपदा॥ सनि
तःसुसनितहव्य॥ ९। ८। ११। ८। अथपंक्तिः॥ यो अर्योमर्तभोजनं॥ ८। ८। ८। ८। ८।
विराट्॥ मन्येत्वायज्ञियंयज्ञियानां॥ १०। १०। १०। १०। सतोबृहती॥ आयंनरः सु
दानवोददाशुषे॥ १२। ८। १२। ८। विपरीतोबृहती॥ यद्ग्नयः स्वानमस्तरन्॥ ८। १२
८। १२। प्रस्तारपंक्तिः॥ पद्भिरपद्भ्रासणवस्तरन्ती॥ १२। १२। ८। ८। प्रस्तारपंक्तिः
पद्रेनो अधिवातय॥ ८। ८। १२। १२। संस्तारपंक्तिः॥ पितुंनुस्तोषंतपुत्रिसुदानवः॥ १२

८।८।१२। विराट् पंक्तिः॥ अग्नेतवश्रवोवयः॥ ८।१२।१२।८। अथत्रिष्टुप्॥ नमो
महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यः॥ ११।११।११।११। उपत्रिष्टुप्॥ सोचिन्नु रक्षियूथ्यो३स्वा
सचा॥ १२।१२।११।११। अभिसारिणी॥ वीवाचाविनाशो मध्वनाचः॥ १०।१०।१२
१२। विराट्॥ स्वस्तिनइंद्रो वृद्धश्रवाः॥ ९।९।१०।११। विराट्स्थाना॥ शुष्णहत्यमि
द्रमारिषण्यः॥ १०।९।१०।११। विराट्पा॥ श्रीणंनोरयमाशुवः॥ ८।११।११।१२॥
ज्योतिष्मती॥ अग्निर्नेद्रेणवरुणेनविष्णुना॥ १२।१२।१२।८। मध्येज्योतिष्मती॥
बृहद्यतेमनवेसंमिमिक्षुः॥ १२।८।१२।१२। महाबृहती॥ नवानोनवतीनां॥
८।८।८।८।१२। यवमध्या॥ ३ बृहद्भिरग्नेअर्चिभिः॥ ८।८।१२।८।८। पंकु
ती॥ समिंद्रेरयामनडुहं॥ १०।१०।८।८।८। विराट्पूर्वा॥ ऊर्ध्वाग्निष्मा

राम
२

महाविहमे॥ १०।१०।८।८।८। अथजगती॥ अभिसंमेषंपुरुहूतमक्रिमं॥
१२।१२।१२।१२। महासतोबृहती॥ विष्णोसोग्रहपतिर्विशामसि॥ १२।८।१२।८
८। महापंक्तिः॥ सूर्येविषमासजामि॥ ८।८।७।६। १०।९। महापंक्तिः॥ यदिंद्रा
ग्नीजनादृमे॥ ८।८।८।८।८।८। अथातिजगती॥ तमिंद्रंजोहवीमिमघना
नमुग्रं॥ १३।१३।१३।१३। अतिजगती॥ मनोमहेमतयोवंतुविष्णवे॥ १२।१२।१२।
८।८। शक्वरी॥ प्रोष्वस्मैपुरोरथं॥ ८।८।८।८।८।८।८। शक्वरी॥ अथ
तेकलशोमिरत्नं॥ ११।११।११।११।११। अतिशक्वरी॥ साकंजातःक्रतुनासा
कमोजसावपक्षिथा॥ १६।१६।१२।८।८। अतिशक्वरी॥ सुषुमायातमिद्दि
वियोश्रीतामस्सराइमे॥ १६।८।१६।१२।८। अष्टी॥ त्रिकद्रुकेषुमहिषो

यवाशिवंतुनिशिष्ठः॥ ३६।३६।१६।८।८। असती॥ यवारुचाहरिण्यापुनानः॥
१२।१२।८।८।८।१२।८। धृतिः॥ अयर्मदइंदुंदोहरहिमुधीनः॥ १२।१२।८।८
८।१६।८। अतिधृतीः॥ सहिश्रध्योनमारुतंतुविष्वणिः॥ १२।१२।८।८।८
१२।८।८। कृतिः॥ अशीसक्तराणि॥ ८०। प्रकृतिः॥ ८४। आकृतिः॥ ८८।
विकृतिः॥ ९२। संस्कृतिः॥ ९६। अभिकृतिः॥ १००। उत्कृतिः॥ १०४॥ ॥इ
ति छंदोमंजरी समाप्ता॥ ॥श्रीगणपतिः प्रियतां॥ ॥श्रीराम॥ ॥ राम
३